

संस्कृत

(कक्षा-11)

कोविड-19 महामारी के कारण शैक्षिक सत्र-2020-21 में विद्यालयों में समय से पठन-पाठन का कार्य न हो पाने की स्थिति में सम्यक विचारोपरान्त विषय विशेषज्ञों की समिति द्वारा निम्नवत् 30 प्रतिशत पाठ्यक्रम कम किये जाने की अनुशंसा की गयी है:-

खण्ड-क (गद्य)

चन्द्रापीडकथा

(साहं पितृभवने बालतया.....सर्व रमणीयकानाम् एकनिवासभूताम्, कादम्बरी ददर्श)

खण्ड-ख (पद्य)

रघुवंशमहाकाव्यम् (द्वितीय सर्ग)

(श्लोक संख्या 27 से 40 तक)

खण्ड-च (व्याकरण)

कारक एवं विभक्ति- द्वितीया विभक्ति- अधिशीडस्थासा कर्म, कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे ।

स्वर सन्धि- एडिपररूपम्, एडःपदान्तादति ।

शब्दरूप- पुल्लिंग- भगवत्, करिन्, पति, सखि, चन्द्रमस् ।

स्त्रीलिंग- वाच्, सरित् श्री, स्त्री, अप् ।

धातुरूप-परस्मैपद-अस्, नश्, आप्, शक्, इष्, कृष् ।

उपर्युक्त के अनुक्रम में 70 प्रतिशत का पाठ्यक्रम निम्नवत् है-

33-कक्षा-11 संस्कृत

(अंक विभाजन)

पूर्णांक-100

सामान्य निर्देश - संस्कृत विषय में 100 अंकों का एक प्रश्नपत्र होगा। प्रश्न-पत्र के प्रत्येक खण्ड में निर्धारित अंकों के अन्तर्गत दीर्घ उत्तरीय, लघु उत्तरीय, अति लघु उत्तरीय एवं बहुविकल्पीय प्रश्नों का समावेश कर कई प्रश्न पूछे जायेंगे । प्रश्नपत्र में प्रश्नों के लिए निर्धारित अंक ही उत्तर के आकार की संक्षिप्तता या दीर्घता का द्योतक होगा। प्रत्येक प्रश्नपत्र के अन्तर्गत समाविष्ट पाठ्यक्रम का अंक विभाजन निम्नवत् होगा:-

खण्ड-क (गद्य)

20 अंक

चन्द्रापीडकथा- आसीत् पुरा शूद्रको नाम राजायथार्थमेव नाम कृतवान् । तर्क ।

- | | | |
|----|--|--------|
| 1. | गद्यांश के आधार पर प्रश्नोत्तर । | 10 अंक |
| 2. | कथात्मक पात्रों का चरित्र चित्रण (हिन्दी में, अधिकतम 100 शब्द)। | 4 अंक |
| 3. | रचनाकार का जीवन परिचय एवं गद्यशैली (हिन्दी अथवा संस्कृत में, अधिकतम 100 शब्द)। | 4 अंक |
| 4. | सन्दर्भित पुस्तक से सम्बन्धित वैकल्पिक प्रश्न । | 2 अंक |

खण्ड-ख (पद्य)

20 अंक

रघुवंशमहाकाव्यम् (द्वितीय सर्ग)- श्लोक संख्या 01 से 26 तक ।

- | | | |
|----|---|-------|
| 1. | किसी श्लोक की सन्दर्भसहित हिन्दी में व्याख्या । | 2+5=7 |
| 2. | किसी श्लोक की सन्दर्भसहित संस्कृत में व्याख्या । | 2+5=7 |
| 3. | कविपरिचय एवं काव्यशैली (हिन्दी अथवा संस्कृत में, अधिकतम 100 शब्द) | 4 |
| 4. | काव्यगत तथ्यों एवं भावों पर आधारित वैकल्पिक प्रश्न । | 2 |

खण्ड-ग (नाटक)

20 अंक

अभिज्ञानशाकुन्तलम् (चतुर्थोऽङ्कः)

- | | | |
|----|--|-------|
| 1. | पाठगत नाटक के किसी गद्यांश अथवा पद्य की सन्दर्भसहित हिन्दी में व्याख्या । | 2+5=7 |
| 2. | पाठगत नाटक के अंशों से सूक्तिपरक पंक्ति की सन्दर्भसहित हिन्दी में व्याख्या । | 2+5=7 |

3. कालिदास का जीवनपरिचय एवं नाट्यशैली (हिन्दी अथवा संस्कृत में, अधिकतम 100 शब्द)। 4
4. सन्दर्भित नाटक पर आधारित वैकल्पिक प्रश्न। 2

खण्ड-घ (पत्र लेखन) 6

मित्र या सम्बन्धियों को पत्र, प्रार्थनापत्र आदि।

खण्ड-ङ (अलंकार)

निम्नलिखित अलंकारों की सामान्य परिभाषा (हिन्दी या संस्कृत में) अथवा उदाहरण संस्कृत में-अनुप्रास एवं यमक। 4

खण्ड-च (व्याकरण)

1. अनुवाद - हिन्दी वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद। 8
2. कारक तथा विभक्ति। 4
3. समास। 4
4. सन्धि अथवा सन्धि-विच्छेद, नामोल्लेख, नियम। 4
5. शब्दरूप। 4
6. धातुरूप। 4
7. प्रत्यय। 2

निर्धारित पुस्तकें एवं पाठ्यवस्तु

खण्ड-क (गद्य)

महाकविवाणभट्टप्रणीतम् - कादम्बरीसारतत्त्वभूतम् “चन्द्रापीडकथा” का पूर्वार्द्ध भाग- आसीत् पुरा शूद्रको नाम राजा
.....यथार्थमेव नाम कृतवान्। तक

खण्ड-ख (पद्य)

महाकविकालिदासप्रणीतम्-रघुवंशमहाकाव्यम् (द्वितीय सर्ग)
श्लोक संख्या 01से 26 तक।

खण्ड-ग (नाटक)

महाकविकालिदासप्रणीतम्-अभिज्ञानशाकुन्तलम् ((चतुर्थोऽङ्कः)
प्रारम्भ से लेकर पद्य संख्या 10 तक।

खण्ड-घ (पत्रलेखन)

मित्र या सम्बन्धियों को पत्र, प्रार्थनापत्र आदि।

खण्ड-ङ (अलंकार)

निम्नलिखित अलंकारों की सामान्य परिभाषा (हिन्दी या संस्कृत में) अथवा उदाहरण संस्कृत में - अनुप्रास एवं यमक।

खण्ड-च (व्याकरण)

1. अनुवाद -
हिन्दी वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद।
2. कारक तथा विभक्ति -
निम्नलिखित सूत्रों तथा वार्तिकों के आधार पर कारकों तथा विभक्तियों का ज्ञान -
- (क) प्रथमा विभक्ति (कर्ता कारक)
(1) स्वतंत्रः कर्ता।
(2) प्रातिपदिकार्थलिंगपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा।
- (ख) द्वितीया विभक्ति (कर्म कारक)
(1) कर्तुरीप्सिततमं कर्म।
(2) कर्मणि द्वितीया।
(3) अकथितं च।
(4) अभितः परितः समयानिकषाहाप्रतियोगेऽपि। (वा0)
- (ग) तृतीया विभक्ति (करण कारक)
(1) साधकतमं करणम्।
(2) कर्तृकरणयोस्तृतीया।
(3) सहयुक्तेऽप्रधाने।
(4) पृथग्विनानानाभिस्तृतीयाऽन्यतरस्याम्।

- (5) येनाङ्गविकारः।
3. **समास -**
निम्नलिखित समासों का ज्ञान, परिभाषा तथा संस्कृत में विग्रहसहित उदाहरण-तत्पुरुष, कर्मधारय, बहुव्रीहि।
4. **सन्धि -** सन्धि, सन्धिविच्छेद, नामोल्लेख तथा नियम।
निम्नलिखित सूत्रों के अनुसार संधियों का उदाहरण सहित ज्ञान।
स्वरसन्धि- (1) इको यणचि, (2) एचोऽयवायावः,
(3) आद्गुणः, (4) वृद्धिरेचि, (5) अकः सवर्णे दीर्घः,
5. **शब्दरूप-** निम्नलिखित संज्ञा शब्दों का रूप -
(अ) पुल्लिङ्ग - राम, हरि, गुरु, पितृ, राजन्, विद्वस्।
(आ) स्त्रीलिङ्ग - रमा, मति, नदी, धेनु, वधू।
6. **धातुरूप-** दसों लकारों का सामान्य ज्ञान तथा निम्नलिखित धातुओं के लट्, लङ्, लोट्, विधिलिङ्ग एवं लृट् में रूप।
परस्मैपद- भू, पठ्, पा, गम्, दृश्, स्था, नी, प्रच्छ के रूप।
7. **प्रत्यय-** क्तिन्, क्त्वा, ल्यप्, शतृ, शानच्, तुमुन्, यत्।
टिप्पणी-संस्कृत देवनागरी लिपि में लिखी जायेगी।